माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

अभिषेक कुमार[1], डॉ0 आषीष पाठक[2]

[1]शोधकर्ता, चौ0 चरण सिंह विष्वविद्यालय, मेरठ

[2]शोध पर्यवेक्षक, शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला स्नाकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ

सार:-

बालक जिस प्रकार के लोगों के बीच रहता है उसका प्रभाव उसके व्यवहार पर पड़ता है। मनोविश्लषेण वादियों तथा मानव विज्ञान वादियों का कथन है कि बालक का साधारण तथा असाधारण व्यवहार शैश्वावस्था से ही निश्चित होने लगता है। माता–पिता द्वारा नियन्त्रण की सीमा, माता–पिता का कुसमायोजन, माता–पिता की आयु, माता–पिता की अभिवृत्तियाँ, परिवार का सामाजिक–आर्थिक स्तर परिवार के आदर्श, परिवार के सदस्यों की संख्या आदि अनके ऐसी बाते हैं। माता–पिता या परिवार के पश्चात् बालक–बालिकाओं के विकास पर विद्यालय का प्रभाव सबसे अधिक होता है। अच्छा विद्यालय, बालक के सृजनात्मकता, अभिप्रेरण एवं उपलब्धि के विकास का वास्तविक और महत्त्वपूर्ण कारक है। कुप्पूस्वामी के अनुसार, ''अच्छा विद्यालय ऐसा पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है, जो छात्रों की रूचियों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न क्रियाओं से परिपूर्ण रहता है। ऐसा विद्यालय स्वस्थ मानसिक विकास का एक वास्तविक कारण है।''

प्रस्तावना :-

शिक्षा बालक की सर्वागीण विकास का अतिउत्तम साधन है। उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का सोपान है। शिक्षा बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हें पूर्ण विकसित करती है। यह वह ज्ञान है जो बालक के हीरे रूपी बुराईयों को दूर कर उसके आन्तरिक गुणों को जगमगा देती है, जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुँचाता है। शिक्षा बालक के व्यवहार का परिष्कार करती है। यह परिष्कार बालक और समाज दोनों के लिए उपयोगी होती है। प्राचीन काल में शिक्षा का अर्थ बालक के मस्तिष्क को ज्ञान से भरना था। बालक को कुछ तथ्यों और सिद्धान्तों को कण्ठस्थ करना पड़ता था और यही उसके शिक्षा की इतिश्री मान ली जाती थी। शिक्षा का उद्देश्य ऐच्छिक जीवन की उन्नति करना ही नहीं था, बल्कि परलोक सुधारना और मुक्ति प्राप्त करना था। शिक्षा देने में बालक की आयु, अभिप्रेरणा, योग्यता और रूझान को किचिंत भी महत्व नहीं दिया जाता था। शिक्षक का कर्तव्य बालक को सूचना–भर देना था। शिक्षा बाल–केन्द्रित न होकर ज्ञान–केन्द्रित थी। वही शिक्षा बालक को दी जाती थी, किन्तु आजकल शिक्षा की प्राचीन धारणा बदल गई है। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष में पूरी शिक्षा प्रक्रिया बालक के आस–पास घूमती है। बालक की शैक्षिक उपलब्धि को लेकर विद्यालयों में अनेकों कार्यशालाओं और सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव न पड़े क्योंकि शैक्षिक उपलब्धि, स्वास्थ्य, समायोजन एवं अभिप्रेरणा से भी प्रभावित हो जाती है। शोध के माध्यम से इसको रोकने का प्रयास किया जायेगा।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-

प्रस्तुत शोध शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो छात्रो में वाँछित व्यवहार उत्पन्न करती है। इन वाँछित व्यवहारों को उत्पन्न करने के लिए औपचारिक व अनौपचारिक संसाधानो का प्रयोग किया जाता है। परिवार को शिक्षा का एक औपचारिक साधन माना जाता है। अन्य परिभाषा के अनुसार 'शिक्षा बालक की अन्तर्निहित योग्यताओं के विकास की प्रक्रिया है। बच्चा एक छोटे पौधे की भॉति होता है। उसे फलने फूलने के लिए जितना खुला व स्वाभाविक वातावरण मिलेगा वह उतना ही अच्छा पुष्पित पल्लवित होगा। परन्तु बच्चे मात्र पौधे ही नहीं होते विशेष रूप से किशोर अवस्था के आस पास वह स्वयं भी चढ़ाते है। उन्हे अनियन्त्रित भी नहीं छोड़ा जा सकता। परिवार में उचित वातावरण पैदा करने के लिए माता–पिता शोध के निष्कर्ष मनावैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिक की आधुनिक परिभाषा के अनुसार ''मनोविज्ञान व्यवहारो का विज्ञान है। यह विभिन्न प्रकार के व्यवहारों में परिस्थिति में ''कारण प्रभाव'' के सम्बन्ध को स्थापित करती है तथा दी गयी परिस्थिति में व्यवहारों का पूर्व अनुमान करने में भी सक्षम होता है। छात्र के व्यवहारो पर उसके व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धियो पर अभिप्रेरणा का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। एक घर जिसका अनुशासनिक वातावरण एकान्तपूर्ण, एकाधिकारवादी, रोबदार व डाट से भरपूर हो, वह छात्र के विकास की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता। परिवार का जनतान्त्रिक वातावरण ही छात्र में वाँछित व्यवहार उत्पन्न करने में सक्षम माना जाता है। बहुत अधिक खुलापन व हस्तक्षेप रहित वातावरण भी छात्रों के लिए हानिकारक हो सकता है। प्रस्ततु शोध के माध्यम से विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा के कारण प्रभावित होने वाले कारकों का अध्ययन किया जायेगा। जिससे विद्यार्थियों के अन्दर अभिप्रेरणा से अन्य प्रभावित कारकों को रोका जाये और उनका सर्वांगींण विकास किया।

शोध समस्या कथन:-

माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

प्रयुक्त शव्दो का परिभाषीकरण:-

प्रस्तुत अध्ययन में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनका स्पष्टीकरणकरना आवश्यक प्रतीत होता है।

माध्यमिक शिक्षा:-

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9, 10 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का माध्यमिक स्तर है।

आवासीय विद्यालय:-

"बालक एवं बालिकाओं के शिक्षा प्राप्त करने का वह स्थान, जहाँ उनके रहने तथा खाने पीने की सम्पूर्ण व्यवस्था होती है" (हिंदी शब्दकोष)। इस प्रकार के विद्यालय सरकारी या गैर सरकारी दोनो प्रकार के होते है।

गैर–आवासीय विद्यालय:-

"बालक एवं बालिकाओं के शिक्षा प्राप्त करने का वह स्थान, जहाँ केवल दिन के समय में ही शिक्षण करवाया जाता है" (हिंदी शब्दकोष)। इस प्रकार के विद्यालय भी सरकारी या गैर सरकारी दोनों प्रकार के होते है।

शैक्षिक उपलब्धि:-

शैक्षिक उपलब्धि बालक के उन क्रियाकलापों का प्राप्त परिणाम है जो उनकी विद्यालय की शैक्षिक व सहषैक्षिक गतिविधियों के आधार पर प्राप्त होती है। उपलब्धि परीक्षण के द्वारा ही विद्यालय में विषय सम्बन्धी ज्ञान की परीक्षा एवं विभिन्न कक्षाओं में पाठयक्रम का निर्धारण किया जाता है। अध्यापक प्रत्येक छात्र के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना

चाहता है कि उसने सम्बन्धित विषयों में जानकारी कितनी मात्रा में प्राप्त की है ? शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का सम्बन्ध वर्तमान से है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य:-

प्रत्येक व्यक्ति जिस किसी कार्य को करता है उसका कुछ न कुछ उद्देश्य निहित होता है। उद्देश्य के बिना वह कुछ भी कार्य नहीं करता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य निम्नंलिखित हैं –

1- माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विधार्थियों की अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन ।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :-

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया –

1- माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है।

शोध अध्ययन विधि :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित प्रतित हौता है इसलिए शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विजनोर शहर में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 9, 10 में अध्ययनरत् 500 विद्यार्थियों में से 250 वालक तथा 250 वालिकाओं का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोधकर्त्ता ने शोध पर्यवेक्षक एवं शोध क्षेत्र के अन्य अनुभवी विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उनके परामर्श से सृजनात्मकता का मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया।

अध्ययन का परिसीमांकन :-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोध प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल विजनोर शहर में स्थित माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित सीमायें निर्धारित हैं।

परिकल्पना परिक्षण :- 1 माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है। इस सम्बन्ध में परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 1.0 में प्रस्तुत किया गया है -

तालिका संख्या -1.0

माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा सम्वन्धी ज्ञान

	लेवेन परिक्षण		साधनों की समानता के लिए टी टेस्ट							
								Sig.		
	F	Sig.	F	Sig.	F	Sig.	F	नीचा करना	ऊपरी	
छात्र	4.168	.043	1.008	198	.314	.03994	.03961	-.03816	.11805	अस्वीकृत
छात्राऐं			1.022	196.089	.308	.03994	.03909	-.03715	.11704	

तालिका संख्या -1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

निष्कर्ष –

किशोरावय विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के लिए समायोजन सबसे महत्वपूर्ण कारक है। अभिप्रेरणा के विभिन्न आयामों को विकसित करने के लिए उनके स्कूलों में नृत्य गायन नाटकीय जैसी विभिन्न प्रकार की सह पाठयचर्या गतिविधियॉ प्रदान की जानी चाहियें। शिक्षको को अच्छा वातावरण वनाना चाहिए और व्यक्तित्व समायोजन में सुधार के लिए विधाथियों को उनके साथियों के साथ बेहतर वातचीत के अवसर प्रदान करने चाहिऐं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. अरोड़ा, रीता (2005);''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
2. अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007);''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005);''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. दुबे, श्यामाचरण (2005);''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–126।
5. लाल एवं पलोड़ (2007);''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0लाल बुक डिपा।
6. प्रसाद, देवी (2001);''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–68,।
7. पाण्डेय, राम शुक्ल (2007);''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ–105, 115, 116, 124।
8. शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005);''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128–129।
9. सुखिया, एस0पी0 (2005);''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0लाल बुक डिपो।
10. अन्वेषिका, एन0सी0टी0ई0, नई दिल्ली।
11. ''भारत की जनसंख्या'', उपकार प्रकाशन, आगरा–2.
12. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, विद्या भारती, लखनऊ (उ0प्र0)
13. गिजुभाई बोधका –शिक्षक हों तो, पृ0 36
14. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, वार्षिक रिर्पोट नई दिल्ली– 1996–97
15. शिक्षा चिन्तन, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर (उ0प्र0)
16. ''उत्तर–प्रदेश एक अध्ययन (शिक्षा के सन्दर्भ में) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स'',आगरा–3.